परिचय

लैव्यव्यवस्था मूसा की तीसरी और विशेष पुस्तक है। इसकी विषय-वस्तु, पवित्रता, इन पाँच पुस्तकों में सुनाई गई कहानियों में प्रमुख स्थान पर है।

उत्पत्ति यह प्रकट करती है कि किस प्रकार परमेश्वर की सबसे सुन्दर रचना मनुष्य ने पाप किया और वह परमेश्वर से दूर हो गया। यह ऐसा भी बताती है कि किस प्रकार अब्राहम के परिवार के द्वारा मनुष्य को फिर से अपनी निकटता में लाने के लिए परमेश्वर ने अपनी योजना पर कार्य करना प्रारम्भ किया। निर्गमन यह रिकॉर्ड प्रदान करती है कि किस प्रकार अब्राहम का परिवार इस्राएल राष्ट्र बन गया। यह बताती है कि किस प्रकार परमेश्वर ने दावा किया कि वह राष्ट्र परमेश्वर का है और उसने उन्हें गुलामी से छुड़ाया। वह उन्हें सीनै पर्वत की ओर ले गया और वहाँ उनके साथ वाचा बाँधी जिसमें उनसे यह अपेक्षा की गई कि वे पवित्र बनें। उसने उन्हें व्यवस्था दी और उनके आराधना के स्थान के रुप में निवासस्थान का निर्माण करने के निर्देश दिए। गिनती यह बताती है कि किस प्रकार वह राष्ट्र पाप करने के बाद भी परमेश्वर की दया की दृष्टि प्राप्त करता है और जंगल में चालीस वर्ष के बाद वायदे के देश की सीमा तक लाया गया। व्यवस्थाविवरण में उस राष्ट्र के लोगों को दिए गए उपदेश सम्मिलित हैं जो उन्हें वायदे के देश में प्रवेश करने के समय दिए गए जिससे वे उस व्यवस्था का पालन कर सकें जो परमेश्वर ने उन्हें दी और पवित्र बने रह सकें।

इस कहानी के मध्य में, लैव्यव्यवस्था के द्वारा इस्राएल राष्ट्र को इस प्रकार चित्रित करते हुए देखा जा सकता है जिस प्रकार की इच्छा परमेश्वर उनसे रखता था। जब परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ वाचा बाँधी तब उसने कहा कि वे उसके लिए "याजकों का राज्य और पवित्र जाति" (निर्गमन 19:6) ठहरेंगे। "पवित्र जाति" होने का अर्थ क्या था? निर्गमन से लेकर व्यवस्थाविवरण में दी गई सारी व्यवस्था इस प्रश्न का उत्तर देने में सहायता करती है परन्तु लैव्यव्यवस्था में पायी जाने वाली विधियाँ ऐसी लगती हैं मानो उन्हें विशेष रुप से तैयार किया गया हो जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि जब परमेश्वर ने इस्राएल को पवित्र होने के लिए बुलाया तो वह क्या कहना चाहता था। लैव्यव्यवस्था 11:45 में ये स्मरणीय शब्द देखे जा सकते हैं: "क्योंकि मैं वह यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया हूँ कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; इसलिये तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"

पंचग्रन्थ की विषय-वस्तु को निम्नलिखित रुप से संक्षिप्त किया जा सकता है:

उत्पत्ति

उद्धार की आवश्यकता उत्पन्न होती है।

अब्राहम के परिवार के द्वारा उद्धार का आरम्भ हुआ।

निर्गमन

अब्राहम का परिवार इस्राएल का राष्ट्र बनता है।

परमेश्वर इस्राएल राष्ट्र के साथ वाचा बाँधता है।

लैव्यव्यवस्था

परमेश्वर इस्राएल से यह चाहता है कि वह एक पवित्र राष्ट्र बने।

गिनती

इस्राएल परमेश्वर की माँगों पर पूरा उतरने में असफल रहा।

परमेश्वर अपने अनुग्रह के द्वारा इस्राएल को वायदे के देश तक लेकर आता है।

व्यवस्थाविवरण

एक पवित्र राष्ट्र बनने के लिए इस्राएल को प्रेरित किया जाता है कि वह भविष्य में परमेश्वर के सारे नियमों का पालन करे।

नाम

लैव्यव्यवस्था पंचग्रन्थ की तीसरी पुस्तक है। अंग्रेज़ी पुराने नियम में इन पाँच पुस्तकों का वर्गीकरण व्यवस्था की पुस्तकों के रुप में किया गया है; इब्रानी बाइबल में ये *तोरह* के रुप में जानी जाती हैं। तोरह, इस शब्द का अर्थ है "व्यवस्था" अथवा "निर्देश।"[1]

इब्रानी भाषा में लैव्यव्यवस्था की पुस्तक का नाम पाठ्य के प्रथम नाम के अनुसार रखा गया है: וַיִּקְרָא *(वय्यीक्रा')*, जिसका अर्थ है "और उसने बुलाया।"[2] हमारा अंग्रेज़ी नाम "लैव्यव्यवस्था" सेप्टुआजिंट से अथवा LXX (इब्रानी बाइबल का प्राचीन यूनानी संस्करण, जिसका अनुवाद लगभग 250 ई.पू. में किया गया) से आता है। इसका अर्थ है "लेवियों से सम्बन्धित।"[3]

लेवी लोग याजकीय गोत्र से थे। इस्राएलियों ने जब सोने के बछड़े की आराधना करने के द्वारा पाप किया तब इस क्षमता में सेवकाई के लिए उनका चुनाव किया गया। चूँकि लेवी लोग मूसा के साथ पंक्तिबद्ध होकर उसकी निकटता में खड़े रहे और जो लोग मूर्ति के सम्मुख झुके उन्हें दण्ड दिया, इस कारण उन्हें परमेश्वर के सम्मुख समर्पित किया गया और उन्होंने परमेश्वर की आशीष पायी (निर्गमन 32:26-29)। उनका प्राथमिक कार्य निवासस्थान (और बाद में मन्दिर) की देखभाल करना और वहाँ की सेवा में सहायता देना था।[4] जैसा कि लेवी लोगों को पूरी तरह से परमेश्वर के घर की और उसके लोगों की देखभाल करने के लिए दे दिया गया था इस कारण परमेश्वर का आदेश था कि अन्य सब गोत्रों को उनकी देखभाल करनी चाहिए। लोगों को दसवाँश देने के द्वारा और बलिदान चढ़ाने के द्वारा उनको सहायता प्रदान करनी होगी। इस्राएल के बारह गोत्रों में लेवी गोत्र की गिनती नहीं की गई।[5] कनान देश पर इस्राएल की जीत के बाद, जैसे अन्य गोत्रों ने भूमि प्राप्त की, वैसे ही एक बड़ा भू-भाग या इलाका प्राप्त करने के स्थान पर

लेवियों को पूरे इस्राएल में अड़तालीस शहर दिए गए।[6]

लैव्यव्यवस्था एक ऐसी पुस्तक है जो व्यवस्थाओं से भरी हुई है। इसका उद्देश्य जंगल में इस्राएल के सम्मुख लाना, और इसके सम्पूर्ण इतिहास में, यह प्रकट करना था कि परमेश्वर अपने लोगों से क्या चाहता था कि वे पवित्र बनें जैसा वह पवित्र है।

लेखक

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक अपने लेखक की पहचान नहीं करती परन्तु यह स्पष्ट करती है कि इसमें दी गई व्यवस्थाएँ परमेश्वर के द्वारा मूसा को दी गई जिससे उनका प्रसारण इस्राएलियों तक किया जा सके। यह, उदाहरण के लिए, इन शब्दों के साथ आरम्भ होती है: "यहोवा ने मूसा को बुलाकर मिलापवाले तम्बू में से उससे कहा, "इस्राएलियों से कह ..." (1:1, 2; देखें 4:1; 5:14; 6:1, 8, 19, 24; 7:22, 28, 38)।[7] इससे पहले निर्गमन की पुस्तक में जो दिया गया है और फिर गिनती की पुस्तक में घटनाएँ जिस क्रम में आगे बढ़ती हैं इस प्रकार इनके साथ इसकी निरन्तरता यह संकेत देती है कि यह पंचग्रन्थ का एक ऐसा भाग है जिसे इनसे अलग नहीं किया जा सकता।

पारम्परिक रुप से सम्पूर्ण पंचग्रन्थ के लेखक के रुप में मूसा का विचार किया गया। जबकि पंचग्रन्थ की पुस्तकों में कोई भी ऐसा वाक्य नहीं है जो इनके लिखे जाने का श्रेय मूसा को जाता है फिर भी अनेक पद यह संकेत करते हैं कि अनेक घटनाओं और नियमों का उसने रिकॉर्ड रखा (निर्गमन 17:14; 24:4; 34:27; गिनती 33:1, 2; व्यव. 31:9, 19, 22)। अन्य पुराना नियम पद व्यवस्था की पुस्तकों के लिए मूसा को नियुक्त करते हैं (यहोशू 1:7, 8; 8:31, 32; 1 राजा 2:3; 2 राजा 14:6; 21:8; एज्रा 6:18; नहेम्य. 13:1; दानिय्येल 9:11-13; मलाकी 4:4)। नए नियम के समय में यीशु, प्रेरित और सुसमाचार प्रचारकों ने यह विचार स्वीकार किया कि मूसा व्यवस्था का लेखक था (मत्ती 19:8; मरकुस 12:26; यूहन्ना 1:45; 5:46, 47; प्रेरितों 3:22; 28:23; रोमियों 10:5)। यहूदी लेख यह गवाही देते हैं कि बाइबल-समय के बाद के काल में यहूदी निरन्तर इस बात का दावा करते रहे कि पंचग्रन्थ का लेखक मूसा था।[8]

उदारवादी विद्वानों[9] के द्वारा एक वैकल्पिक विचार सामने रखा गया कि मूसा के द्वारा लिखे जाने के स्थान पर अनेक लिखित स्रोतों के उन अज्ञात संपादकों के द्वारा अनेक शताब्दियों तक इसे आगे ले जाया गया जो स्वयं मौखिक परम्पराओं पर आधारित थे। इस विचार का एक सर्वोच्च प्रस्तुतिकरण उन्नीसवीं शताब्दी के बाद के भाग में जुलियस वेल्लहौसेन के द्वारा सुझाया गया, जो दस्तावेज़ के रुप में लिखित अनुमान[10] है। उसने यह दावा किया कि पंचग्रन्थ का निर्णायक रुप चार दस्तावेज़ों से प्राप्त होता है: "जे" ("यहोवावादी" के लिए), "ई" ("एलोहीवादी" के लिए), "डी" ("व्यवस्थाविवरणवादी" के लिए), और "पी" ("याजकीय कार्य" के लिए)।[11] इस विचार के अनुसार यहूदी लोग व्यवस्था के लिए मूसा को श्रेय देते हैं

परन्तु यहूदी व्यवस्था का वास्तविक नैतिक और जातीय मानक स्तर वास्तविकता में भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ हुआ। लैव्यव्यवस्था के लिए यह कहा गया है कि यह "पी" (याजकीय दस्तावेज़) से प्राप्त किया गया है जिसका आरम्भ निर्गमन अथवा निर्गमन के बाद के युग में लगभग छठवीं अथवा पाँचवीं शताब्दी ई.पू. हुआ, सम्भावित रुप से यह आरम्भ लगभग 450 ई.पू. के समय में हुआ। "पी" "पवित्रता के कोड" (लैव्य. 17-26) को सम्मिलित करता है और यह एक ऐसा भाग है जिसका आरम्भ अन्य स्थान से होते हुए देखा जा सकता है।[12]

दस्तावेज़ के रुप में लिखित अनुमान को समर्थन देने के लिए दिया गया एक तर्क यह है कि "याजकीय कोड का कानून इस्राएल के धर्म के विकास में निर्वासन के बाद के स्तर का प्रतिनिधित्व करता है; पाँचवीं शताब्दी ई.पू. से पहले तक इस प्रकार के नियम की खोज करना असम्भव था।"[13] ग्लीसन एल. आर्चर, जुनियर, ने "याजकीय कोड" (साथ ही पंचग्रन्थ के अन्य भाग) और प्राचीन निकट पूर्व के अन्य नियम जो किसी के भी कालक्रम के द्वारा मूसा के समय की पूर्वदिनाँक बताते थे उनके बीच अनेक समानताओं की ओर संकेत करते हुए इस आरोप को अस्वीकार किया।[14]

जिस समय लिखित अनुमान को विस्तृत रुप से स्वीकार किया जाता है उसी समय बाइबल के विद्यार्थी यह अनुमान न लगाएँ कि यह सही है। इस विचार को स्वीकार करने में अनेक समस्याएँ शामिल हैं।

पहला, लिखित अनुमान के साक्ष्य पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं। एक चौकस परीक्षण के बाद इससे प्राप्त साक्ष्य उन लोगों को ही अपनी बात मनवाते हुए देखे जा सकते हैं जो उदारवादी विद्वानों के द्वारा तैयार किए गए कुछ अनुमानों को पूर्व में स्वीकार कर चुके हैं - इनमें से मुख्य विश्वास यह है कि सम्भावित रुप से इतिहास में किसी प्रकार की कोई दिव्य घटना नहीं हुई होगी।

दूसरा, दस्तावेज़ के रुप में लिखित अनुमान इस्राएल के धर्म के विकास के एक क्रमानुसार विकासशील विचार पर आधारित था जो कि गलत साबित हुआ है।

तीसरा, साक्ष्य यह संकेत करते हैं कि दस्तावेज़ के रुप में लिखित अनुमान के लिए मानी जाने वाली दिनांक से पहले पंचग्रन्थ की पुस्तकों को लिखा गया। समय के विषय में यह जानकारी इस बात को मानने के लिए और भी कारण उपलब्ध करवाती है कि पंचग्रन्थ को मूसा के द्वारा लिखा गया।

बाइबल विषयक साक्ष्य, मूसा के द्वारा लिखे जाने की बलवान परम्परा[15] और दस्तावेज़ के रुप में लिखित अनुमान की कमज़ोरियों को देखते हुए नि: सन्देह यह देखा जा सकता है कि पुराना नियम की पहली पाँच पुस्तकों का लेखक मूसा था जिसमें लैव्यव्यवस्था भी थी। ऐसा मसीही व्यक्ति जो धर्मशास्त्र की प्रेरणा को स्वीकार करता है वह इस बाइबल विषयक सत्य को स्वीकार करने से हर हाल में रोक दिया जाता है कि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएल को व्यवस्था दी।

दिनांक

इस पुस्तक को लिखे जाने पर इस पुस्तक की दिनांक आधारित है। जो लोग दस्तावेज़ के रुप में लिखित अनुमान का समर्थन करते हैं उनके अनुसार, लगभग 500-400 ई.पू. लैव्यव्यवस्था लिखी गई। अगर मूसा स्वयं इसका लेखक था तो स्पष्ट रुप से यह माना जा सकता है कि जिस समय में मूसा जीवित था, उसी समय की दिनांक इस पुस्तक के लिए देखी जा सकती है। लैव्यव्यवस्था को तब निर्गमन के आस-पास के समय की दिनांक के साथ देखा जा सकता है; रुढ़िवादी विद्वान सामान्यता निर्गमन को लगभग 1445 ई.पू. की दिनांक प्रदान करते हैं।[16]

ऐतिहासिक सन्दर्भ

लैव्यव्यवस्था में प्राथमिक रुप से वे नियम शामिल हैं जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा सीनै पर्वत पर इस्राएल को उस समय दिए जब वे लोग वहाँ पर समय बिता रहे थे।[17] लैव्यव्यवस्था में इन नियमों का दिया जाना, निर्गमन में निवासस्थान के निर्माण और समर्पण के बाद में आता है और गिनती में सीनै से इस्राएल के प्रस्थान के रिकॉर्ड के साथ आगे बढ़ता है। लोग सीनै से आगे बढ़े जिससे वे कनान देश में प्रवेश कर सकें।

इस पुस्तक में दो ऐतिहासिक भाग देखने को मिलते हैं। पहला, जैसा कि लैव्यव्यवस्था 8-10 में देखने को मिलता है, जहाँ पर यह याजकीय वर्ग के शुद्धिकरण से सम्बन्ध रखता है और हारून के दो बेटों, नादान और अबीहू की अनाज्ञाकारिता और इसके बाद उनको मिले दण्ड का विवरण शामिल करता है। दूसरा, लैव्यव्यवस्था 24:10-23 उस निन्दक के बारे में बताता है जो मिश्रित विवाह का उत्पाद है, कि उसके साथ क्या हुआ।

उद्देश्य, प्रभाव और सामग्री

लैव्यव्यवस्था का उद्देश्य पवित्रता को बढ़ावा देना था जिससे इस्राएल वास्तव में परमेश्वर का "पवित्र राज्य" बन जाए। इस कारण सम्पूर्ण लैव्यव्यवस्था की पुस्तक "पवित्रता" पर बल देती है। यह विषय-वस्तु 11:44, 45 में प्रकट की गई है जहाँ पर परमेश्वर ने बार-बार कहा, "पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"

पुस्तक की सामग्री अनेक तरीकों से इसकी विषय-वस्तु से सम्बन्धित है:

परमेश्वर की पवित्रता उसकी इच्छा के प्रति समर्पण की माँग करती है। सम्पूर्ण रुप से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में असफल होने के परिणाम भयानक हो सकते हैं जिस प्रकार नादाब और अबीहू के साथ हुआ। परमेश्वर पूरी तरह से पवित्र है इस कारण उसके नाम की निन्दा नहीं की जानी चाहिए जैसा अध्याय 24 में एक निन्दक को सीख मिली।

इस्राएल के द्वारा पवित्रता बनाए रखने के लिए लोगों से यह माँग की गई कि वे व्यवस्था में दी गई विधियों का पालन करने में सचेत रहें। इन विधियों में

व्यवस्था के द्वारा स्थापित बलिदान चढ़ाना और पर्वों और सब्त के दिनों का पालन करना शामिल था। बाइबल की किसी अन्य पुस्तक की तुलना में लैव्यव्यवस्था गहराई के साथ व्यवस्था के द्वारा स्थापित बलिदान और साथ ही पर्वों और उत्सवों के बारे में बताती है।

राष्ट्र विशेष की पवित्रता को सुनिश्चित करने के लिए याजक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। हालांकि यह पुस्तक विशेष रूप से विवरण देती है कि मूसा को दिए गए याजकों तक पहुँचाए जाने थे फिर भी वे उन सब विधियों के विषय में जानकारी रखते थे जो लैव्यव्यवस्था में शामिल हैं। उनका कार्य यह भी था कि वे इन नियमों को लोगों तक पहुँचा दें और उन लोगों को इन नियमों को लागू करना है। जैसा कि यह याजकों की ज़िम्मेदारी थी कि वे यह सुनिश्चित करें कि बलिदान चढ़ाए जाने के समय परमेश्वर की विधियों का पालन किया जाए, इस कारण लैव्यव्यवस्था को "याजकों की लघु पुस्तिका" भी कहा जाता है।[18]

इस्राएल के लोगों को पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाया गया। हालांकि लैव्यव्यवस्था धार्मिक रीतियों पर ध्यान केन्द्रित करती है, इसी के साथ इसमें नैतिक और जातीय नियम भी शामिल हैं जिन्हें प्रत्येक इस्राएली व्यक्ति को मानना आवश्यक था। यह पर्याप्त नहीं था कि, उदाहरण के लिए, एक इस्राएली व्यक्ति बलिदान चढ़ाए और विश्वासयोग्यता के साथ पर्वों को मनाए; उसके लिए यह भी आवश्यक था कि वह अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करे और इसी प्रकार उसके साथ व्यवहार भी करे (19:18)।

मसीही लोगों के लिए इसका महत्व

लैव्यव्यवस्था मसीही लोगों के लिए अर्थपूर्ण है इस सच्चाई पर नए नियम में लगभग तीस बार बताया गया है अथवा संकेत किया गया है।[19] इस सच्चाई के बावजूद, हमारा झुकाव इस विचार की ओर हो सकता है कि जो पुस्तक इतने विस्तृत रुप से पुराने नियम की विधियों के बारे में बताती है उसका मूल्य हमारे लिए थोड़ा अथवा नहीं के बराबर है। फिर भी, लैव्यव्यवस्था मसीही लोगों के लिए अनेक प्रकार से उपयोगी है।

पहला, "पवित्रता" शब्द पर दिया गया बल सीधे रुप से मसीही लोगों के लिए लागू होता है। हमें बताया गया है, "पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, 'पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।'" (1 पतरस 1:15, 16)।

दूसरा, लैव्यव्यवस्था में बताए गए मवेशियों के बलिदान यीशु मसीह का प्रतीक हैं जैसा उसके लिए देखने को मिलता है, "यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29; देखें इब्रा. 9:7-15)। उन मवेशियों के बलिदानों के बारे में अधिक जानने के द्वारा मसीही लोग और भी उचित रुप से मसीह के बलिदान की सराहना कर सकते हैं। पुराना नियम व्यवस्था में प्रायश्चित के लिए परमेश्वर की योजना में लहू बहाने की आवश्यकता, हमारे प्रायश्चित के

लिए मसीह का लहू बहाने की आवश्यकता बताने में सहायता प्रदान करती है (17:11; देखें इफ़ि. 1:7; इब्रा. 9:22)।

तीसरा, पूर्व में जानवरों के बलिदान चढ़ाने के लिए जिस प्रकार परमेश्वर ने इस्राएल के सम्मुख आवश्यकता रखी थी उसी प्रकार से वह वर्तमान में मसीही लोगों से आत्मिक बलिदान चढ़ाने की अपेक्षा रखता है। उदाहरण के लिए, जब हम परमेश्वर की सेवा करते हैं तब हम हमारे शरीरों को जीवित बलिदान करके चढ़ाएँ और भले काम करें (रोमियों 12:1, 2)। हम अपने होंठों के साथ "परमेश्वर को स्तुतिरूपी बलिदान" चढ़ाते हैं (इब्रा. 13:15)। सुसमाचार के प्रचार के लिए हमारी आर्थिक सहायता "सुखदायक सुगन्ध, ग्रहण करने योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है।" (फ़िलि. 4:18)।

चौथा, विभिन्न रीति-रिवाजों पर इस पुस्तक का प्रभाव मसीही लोगों को बार-बार विचार करने के लिए बाध्य करता है कि धार्मिक रीति-रिवाजों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा है। सम्भव है कि रीति-रिवाज के महत्व को कम महत्वपूर्ण समझने अथवा "मात्र रीति-रिवाज" अथवा "निष्फल रीति-रिवाजों" के अर्थ में विचार करने की ओर हम झुक जाएँ। लैव्यव्यवस्था हमें रीति-रिवाजों को सही प्रकार से मानने के लिए पुनः विचार करने पर बाध्य कर दे जिसमें हृदय की गहराई से इस पर वचन मनन किया जा सके और इसके पालन में शामिल होने वाले लोग सम्पूर्ण प्रतिभागिता से इसमें शामिल हो जाए।

पाँचवाँ, इस पुस्तक में पाई जाने वाली शिक्षाएँ और नैतिक नियम मसीही लोगों के लिए निर्देश का काम करते हैं। यह सच है कि पुराने नियम दूर कर दिए गए है (गला. 3:24, 25; कुलु. 2:14; इब्रा. 7:12)। फिर भी अगर देखा जाए तो इसके नैतिक आदेश नई वाचा की आचरण सम्बन्धी आवश्यकताओं और नैतिक आवश्यकताओं से कुछ ही अन्तर रखते हैं। यीशु ने स्वयं कहा कि व्यवस्था, परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करने की दो महान आज्ञाओं पर आधारित है (मत्ती 22:37-40; मरकुस 12:29-31)। गलातियों 5:14 कहता है, "क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।'"

लैव्यव्यवस्था 19 में पायी जाने वाली विशेष विधियों के पीछे जो सिद्धान्त रखे गए हैं वे, उदाहरण के लिए, वर्तमान मसीही जीवन के लिए लागू किए जा सकते हैं और उन्हें लागू किया जाना चाहिए क्योंकि वे यह समझाते हैं कि जब यह कहा जाता है, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" (19:18) तो इसका अर्थ क्या है।

मसीही होने के कारण लैव्यव्यवस्था हमें यह स्मरण कराए कि जब हम मसीह के बलिदान के द्वारा बचा लिए गए हैं तो हम पवित्र बन गए हैं। जिस प्रकार पुराना नियम में बलिदान की व्यवस्था में लहू महत्वपूर्ण था इस कारण हम लहू से - अर्थात मसीह के लहू से बचा लिए गए हैं। इस कारण अब हमें पवित्र बने रहना है। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा और मसीह के लहू के द्वारा हमारे निरन्तर शुद्धिकरण के द्वारा, परमेश्वर के नियमों का पालन करते हुए संसार से अलग रहने के लिए

जब हम निरन्तर प्रयासरत रहते हैं तब हम पवित्र बने रह सकते हैं।

रूपरेखा

द *NRSV हार्पर स्टडी बाइबल* लैव्यव्यवस्था के लिए निम्नलिखित मूलभूत रूपरेखा प्रदान करती है:

I. पवित्र परमेश्वर तक पहुँच बनाने का तरीका (1-16)
II. पवित्र परमेश्वर के साथ संगति बनाए रखना (17- 27)[20]

इस रूपरेखा के अनुसार इस पुस्तक का पहला भाग इस बात से व्यवहार रखता है कि एक व्यक्ति किस प्रकार क्षमा प्राप्त कर सकता है और इस प्रकार अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध प्राप्त करता है। इसका दूसरा भाग इस बात से व्यवहार करता है कि एक व्यक्ति किस प्रकार उस सम्बन्ध को बनाए रख सकता है।

अन्य स्त्रोत भी इस रूपरेखा को शामिल करते हैं:

I. बलिदान (1-7)
   A. सामान्य विधियाँ (1:1-6:7)
   B. याजकीय विधियाँ (6:8-7:38)

II. याजकीय भाग (8-10)
   A. शुद्धिकरण (8)
   B. स्थापन (9)
   C. अनाज्ञाकारिता के परिणाम (10)

III. शुद्धता और अशुद्धता (11-16)
   A. विधियाँ (11-15)
   B. पश्चात्ताप का दिन (16)

IV. पवित्रता का कोड (17-27)
   A. लहू की शुद्धता (17)
   B. नैतिक नियम (18-20)
   C. याजकीय विधियाँ (21; 22)
   D. आराधना का कलैंडर (23)
   E. तेल, रोटी और निन्दा (24)
   F. सब्त का वर्ष और जुबली (25)
   G. पुरस्कार और दण्ड (26)

H. शपथ और दसवाँश (27)[21]

निम्नलिखित मूलभूत रूपरेखा का पालन इस अध्ययन में किया गया है:

I. पवित्रता प्राप्त करना (1-16)
   A. बलिदानों के द्वारा (1-7)
   B. शुद्ध किए हुए एक याजकीय कार्यालय के द्वारा (8-10)
   C. शुद्ध और अशुद्ध के मध्य अन्तर करने के द्वारा (11-15)
   D. प्रायश्चित का दिन मनाने के द्वारा (16)

II. पवित्रता को प्रतिदिन व्यवहार में लाना (17-27)
   A. परमेश्वर के नैतिक और रीति-रिवाज सम्बन्धी नियमों का पालन करने के लिए एक व्यक्ति की ज़िम्मेदारी (17-20)
   B. याजकीय ज़िम्मेदारियाँ (21; 22)
   C. पवित्रता को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्र की ज़िम्मेदारी (23-25)
   D. पवित्रता को प्रतिदिन व्यवहार में लाने के कारण: आशीष और श्राप (26)
   E. पवित्रता के साक्ष्य: शपथ और मूल्यांकन (27)

एक पवित्र राष्ट्र

निर्गमन में हम सीखते हैं कि परमेश्वर ने अपने सामर्थी हाथ से इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया। वह उन्हें सीनै पर्वत की ओर लिए चला और उनके साथ उसने वाचा बाँधी। उसने उनसे कहा कि अगर वे उसकी आज्ञा का पालन करेंगे तो उसका निज धन ठहरेंगे (निर्गमन 19:5)। उन्हें चाहिए कि वे उसके लिए "याजकों का राज्य और पवित्र जाति" (निर्गमन 19:6) ठहरें।

यह एक प्रश्न उत्पन्न करता है: "एक पवित्र जाति" का अर्थ क्या है?

परमेश्वर ने इस प्रश्न का उत्तर पंचग्रन्थ के शेष भाग में दिया जहाँ उसने इस्राएल को ये निर्देश दिए कि वे किस प्रकार जीवन जीएँ और उसकी आराधना करें। फिर भी यह लैव्यव्यवस्था है जहाँ पर उसने विशेष रुप से वर्णन किया कि वह लोगों से कैसी अपेक्षा रखता है जिससे कि वे वास्तव में एक पवित्र जाति बनें रह सकें।

लैव्यव्यवस्था की विषय-वस्तु पवित्रता है और यह विषय-वस्तु 11:44, 45 में स्पष्ट रुप से बताई गई है जहाँ पर परमेश्वर ने अपने निज लोग इस्राएल को, जिसे उसने मिस्र के दासत्व से छुड़ाया था बार-बार कहा, "पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ" (देखें 19:2; 20:26)।

हो सकता है कि हम यह विचार करें, "यह रोचक है, परन्तु इससे हमारा क्या सम्बन्ध है? यह उस समय की बात है; यह समय अलग है। वे नियम जिन्होंने

इस्राएल की सहायता की थी जिससे वे पवित्र बने रह सकें उनसे वर्तमान मसीही लोगों का कोई सम्बन्ध नहीं है।"

यह सच है कि पुराना नियम सामान्य रुप से सीधे हम पर लागू नहीं होता क्योंकि पहली वाचा का अब हम पर कोई अधिकार नहीं है। फिर भी , घूम फिर कर यह हम पर लागू होता है (देखें रोमियों 15:4; 1 कुरि. 10:11)। अगर प्रेरणा पाए हुए लेखकों और प्रचारकों ने नए नियम में इसे हमारे लिए लागू किया है तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि यह हमसे सम्बन्ध रखता है। ऐसा ही लैव्यव्यवस्था 11:44, 45 के साथ है। उस पद से बताते हुए पतरस ने लिखा,

> आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (1 पतरस 1:14-16)।

पतरस ने स्पष्ट रुप से कहा कि इस्राएल के लिए जो आज्ञा दी गई कि वे "पवित्र बनें" यह कलीसिया के लिए भी लागू होती है। यह सच्चाई 1 पतरस 2 में मज़बूत की गई है जहाँ पर प्रेरित ने मसीही लोगों से कहा कि फिर से "वे जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनाए गए, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाएँ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य होते हैं।" (1 पतरस 2:5)। कुछ आयतों के बाद उसने मसीही लोगों का वर्णन "एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा," के रुप में किया जिनके लिए उसने ऐसा भी कहा "जिसने ... अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है" (1 पतरस 2:9)। इस पद के अनुसार वर्तमान समय की कलीसिया वही पद प्राप्त करती है जो पुराने नियम के समय में इस्राएल के पास था। वे लोग "एक पवित्र जाति" थे; हमें भी चाहिए कि हम "एक पवित्र जाति" बनें। आगे, जैसा परमेश्वर पवित्र है उनके लिए यह आवश्यक था कि वे भी पवित्र बनें। जैसा परमेश्वर पवित्र है हमें भी पवित्र बनने की आवश्यकता है।

इस्राएल के लिए इसका अर्थ क्या था कि वे पवित्र बनें? जब हम इस प्रश्न का उत्तर देते हैं तब हम यह अच्छी प्रकार से समझ पाएँगे कि वर्तमान कलीसिया के लिए पवित्र बनने का अर्थ क्या है। हमें उस ज्योति पर ध्यान देने की आवश्यकता है जो लैव्यव्यवस्था, पवित्रता के विषय पर डालती है जो उस समय के इस्राएलियों के लिए और वर्तमान के मसीही लोगों के लिए है।

परमेश्वर के उस समय के पवित्र लोग

पुराना नियम "पवित्र" शब्द के इब्रानी शब्द קָדוֹשׁ *(कादोश)* का अनुवाद करता है जिसका अर्थ है "अलग," "अलग [किया हुआ]," अथवा "पवित्र।"[22] इस शब्द में "एक मज़बूत धार्मिक स्वयं के गुण का अर्थ देखा जा सकता है। एक अर्थ में यह शब्द

किसी विशेष उद्देश्य के लिए 'अलग किया हुआ' अथवा 'समर्पित,' किसी वस्तु अथवा स्थान अथवा किसी दिन को 'पवित्र' बनाए रखने का वर्णन करता है।"[23]

लैव्यव्यवस्था में "पवित्रता" स्पष्टता के साथ एक महत्वपूर्ण विषय-वस्तु है। "पवित्र" शब्द इस पुस्तक में नब्बे बार पाया जाता है जो (NASB में) छिहत्तर बार आता है। जिस प्रकारसे लैव्यव्यवस्था में "पवित्र" होने के बारे में वर्णन किया गया है इसमें निम्नलिखित हैं: (1) इस्राएल का प्रभु परमेश्वर पवित्र है; उसका नाम पवित्र है और इसे दूषित नहीं किया जाना चाहिए (लैव्य. 11:44, 45; 20:3; 21:8; 22:32)। उसके साथ इस प्रकार व्यवहार किया जाना चाहिए कि "वह पवित्र" है (10:3)। (2) जैसा कि परमेश्वर पवित्र है लोगों को चाहिए कि वे भी पवित्र बनें (11:44, 45; 19:2; 20:26)। (3) निवासस्थान पवित्र था जिसमें तम्बू के आस-पास का आँगन भी शामिल है। बाहरी भाग "पवित्रस्थान" कहलाता था और अन्दर का भाग "परमपवित्र स्थान" (देखें 16:2) कहलाता था। (4) याजक पवित्र थे और जो वस्त्र वे धारण करते थे वे पवित्र थे (8:9; 16:4; 21:6)। (5) बलिदान पवित्र थे (14:13)। (6) जिन उत्सवों को इस्राएल के लोग मनाते थे वे पवित्र थे (23:2)। (7) जो कुछ परमेश्वर को दिया जाता था अथवा समर्पित किया जाता था वह पवित्र था (19:24; 27:9)। पवित्रता के महत्व पर इस सच्चाई के द्वारा बल दिया गया कि याजक और लोग "पवित्र और दूषित के मध्य" और "शुद्ध और अशुद्ध के मध्य" अन्तर करें (10:10)।

धर्मशास्त्र के ये पद क्या सुझाते हैं जब यह कहा गया कि इस्राएल "एक पवित्र जाति" बनें? मूल रुप से इस्राएल दो प्रकार से अलग किए हुए लोगों का एक समूह था, अर्थात अन्य जातियों *से* अलग किया हुआ समूह और परमेश्वर के कामों *के लिए* अलग किया हुआ समूह।

1. अन्य जातियों *से* अलग किया हुआ समूह। 11:44, 45 में इस सच्चाई पर बल देते हुए बताया गया है कि परमेश्वर इस्राएल को मिस्र से निकाल कर ले आया। परिणामस्वरूप वे उसके लोग बन गए और वह उनका परमेश्वर बन गया। परमेश्वर ने उनसे कहा कि वे स्वयं को "शुद्ध" करें जिससे वे "पवित्र बनें" और स्वयं को "अशुद्ध" न करें। जब परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाया तब उसने उन्हें बुलाया जिससे वे संसार में अन्य जब जातियों से अलग हों। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएल से बात की: "क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है; यहोवा ने पृथ्वी भर के सब देशों के लोगों में से तुझ को चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे" (व्यव. 7:6; देखें 14:2)। मूसा के समय में इस्राएली लोग (जो बाद में यहूदी कहलाए) परमेश्वर के विशेष लोग थे।

जैसा कि इस्राएली लोग परमेश्वर के विशेष लोग थे इसलिए उनके लिए यह आवश्यक था कि वे स्वयं को अपने आस-पास की जातियों के पाप से दूषित होने से बचाए रखें। परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी, "यह आज्ञा जो मैं ने तुम्हारे मानने को दी है उसे तुम मानना, और जो घिनौनी रीतियाँ तुम से पहले प्रचलित हैं उनमें से किसी पर न चलना, और न उनके कारण अशुद्ध हो जाना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ" (लैव्य. 18:30; देखें 20:23)। पुराने नियम के अन्य पद भी

इस बात पर बल देते हैं। व्यवस्थाविवरण 18:9 कहता है, "जब तू उस देश में पहुँचे जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तब वहाँ की जातियों के अनुसार घिनौना काम करना न सीखना।" इस्राएल को जैसा जीवन जीने की ज़िम्मेदारी दी गई थी उसके अनुसार उसने जीवन नहीं जीया और इस कारण उस जाति को निर्णायक रुप से दण्ड दिया गया (और शुद्ध किया गया) जैसा कि हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को दासत्व में ले गया।

हम लोग भी प्रायः समझौते को एक अच्छी चीज़ समझते हैं। फिर भी पुराने नियम के समय में शैतान की एक मुख्य रणनीति, जोखिम में डालना होता था, जिसके प्रयोग से उसने परमेश्वर के लोगों को नष्ट करना और परमेश्वर की योजना को विफल करना चाहा। लोगों की परीक्षा हुई जिससे वे यह प्रयास करें कि वे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आराधना के साथ अपने चारों ओर रहने वाली जातियों के ईश्वरों की आराधना को स्वीकार करने के द्वारा उनमें मिल जाएँ।

फिर भी परमेश्वर ने यह माँग रखी कि उसके लोग, मात्र उसी की आराधना करें। दस आज्ञाओं को देने के समय उसने कहा,

> मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ ... (निर्गमन 20:2-5)।

लैव्यव्यवस्था में ऐसे नियम शामिल हैं जो इस्राएलियों से कहते हैं कि वे अन्यजातियों के ईश्वरों से स्वयं को अलग करें। लैव्यव्यवस्था 19:4 कहता है, "तुम मूरतों की ओर न फिरना, और देवताओं की प्रतिमाएँ ढालकर न बना लेना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

जब इस्राएल ने अपने आस-पास के लोगों के साथ समझौता करते हुए अपने परमेश्वर के साथ-साथ उनके ईश्वरों की आराधना करना आरम्भ कर दिया तब परमेश्वर विवश था कि वह अपने लोगों को दण्ड दे। वे लोग पवित्रता की प्रथम परीक्षा में असफल रहे - जिसमें उनसे अपेक्षा की गई कि वे अन्य जातियों से और अन्य ईश्वरों की आराधना से स्वयं को अलग रखें।

2. परमेश्वर के कामों *के लिए* अलग किया हुआ समूह। इस्राएलियों से यह अपेक्षा की गई कि वे परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए स्वयं को अलग रखें। पवित्रता के विचार का अर्थ है परमेश्वर के मिशन के लिए शुद्ध किए हुए। उसके लोगों से आशा थी कि वे पवित्रता को प्रस्तुत करें - मात्र अन्य ईश्वरों की आराधना से स्वयं को अलग रखने के द्वारा ही नहीं परन्तु प्रभु परमेश्वर की आराधना और सेवकाई के लिए भी स्वयं को समर्पित करना।

इस्राएल को किस स्तर तक परमेश्वर के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता थी? उन्हें पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित होना था! लैव्यव्यवस्था में यह

सच्चाई इससे स्पष्ट है कि पुस्तक में दिए गए नियम मात्र बलिदानों और धार्मिक उत्सवों के विषय में ही नहीं बताते परन्तु लोगों के जीवन के अन्य पहलुओं के बारे में भी बताते हैं। वे इस्राएली जो लैव्यव्यवस्था के नियमों का पालन करना चाहते थे उन लोगों ने यह खोज की कि उनकी पवित्रता अर्थात परमेश्वर के प्रति उनका समर्पण यह निश्चित करता था कि किससे विवाह करने के लिए उन्हें अनुमति है (18:1-18), बच्चों और माता-पिता के मध्य किस प्रकार के सम्बन्ध हों (19:3), एक व्यक्ति अपने मज़दूर के साथ किस प्रकार का व्यवहार रखें (19:13), और प्रतिदिन के जीवन के अन्य विवरणों की भी उन्होंने खोज की।

अगर हम लैव्यव्यवस्था से परे शेष व्यवस्था को देखें तो हम पाएँगे कि लगभग सब बातों के लिए परमेश्वर के पास, जो इस्राएल ने किया, व्यक्तिगत रुप से और सामूहिक रुप से कहने के लिए था।[24] अन्य शब्दों में, लैव्यव्यवस्था में और निर्गमन, गिनती और व्यवस्थाविवरण में जिस प्रकार मूसा की व्यवस्था पाई जाती है वह मात्र धार्मिक नियमों का पालन करने के लिए अधिकार रखने वाले नियम मात्र ही नहीं थे। इसके स्थान पर यह एक ऐसी व्यवस्था थी जो सम्पूर्ण जीवन से जुड़ी हुई थी। जब इस्राएलियों को पवित्र जाति बनने के लिए बुलाया गया तब उन्हें परमेश्वर के प्रति समर्पित लोगों के रुप में बुलाया गया। उन दिनों में एक इस्राएली के लिए यह नहीं माना जा सकता कि मात्र सही स्थान में सही समय पर आराधना करने से और सही बलिदान चढ़ाने से उसे यह प्रमाण मिल जाता है कि परमेश्वर उससे प्रसन्न हो जाएगा।

परमेश्वर ने यह कभी नहीं चाहा कि मात्र धार्मिक क्रियाओं के द्वारा उसके लोग उसमें अपना विश्वास प्रकट करें। उसने उनके लिए यह चाहा कि वे उसके लिए इस प्रकार शुद्ध किए जाएँ जिससे उनका पूरा जीवन प्रभावित हो जाए। पुराने नियम समय में परमेश्वर के लोग परमेश्वर के लिए और परमेश्वर के प्रति पवित्र होने के लिए बुलाए गए जिसमें वे पूरी तरह से उसके प्रति समर्पित रहें। उनसे यह अपेक्षा की गई कि वे जो कुछ करें वह पूरी तरह से परमेश्वर के नियमों के अनुसार हो।

वर्तमान के परमेश्वर के पवित्र लोग

वर्तमान में पवित्र होने का अर्थ उसी समान है जिस प्रकार यह इस्राएल के दिनों में था। "पवित्र" शब्द के लिए यूनानी नया नियम (ἅγιος, *हगिओस)* में अर्थ उसी समान है जिस प्रकार यह पुराने नियम में इब्रानी शब्द *कादोश* के लिए है। "इसके नैतिक और आत्मिक महत्व में," इसका अर्थ है "पाप से अलग किए हुए और इस कारण परमेश्वर के लिए शुद्ध किए हुए, पवित्र।"[25]

मसीही होने के कारण हम पवित्र किए गए हैं जिस प्रकार इस्राएल पवित्र था। हम अलग लोग हैं अथवा अलग किए गए हैं। हमें इस्राएल के समान अपने आस-पास के संसार *से* अलग होना है और परमेश्वर के कामों *के लिए* अलग होना है।

1. संसार *से* अलग किए हुए। नया नियम सिखाता है कि जब हम मसीही व्यक्ति बने तब हम संसार से छुड़ा लिए गए और परमेश्वर के राज्य में स्थानान्तरित

कर दिए गए (कुलु. 1:13, 14)। अन्य लोग संसार में हैं और संसार के हैं परन्तु हम में जो मसीही लोग हैं वे संसार में रहते हैं परन्तु "वे संसार के नहीं हैं" (यूहन्ना 17:14, 16)।

वर्तमान में परमेश्वर के लोग होते हुए, हो सकता है कि हम यह भूल जाएँ कि हमें संसार से अलग रहने की आवश्यकता है अथवा हम अलग किए हुए लोग हैं। इस परीक्षा के कारण धर्मशास्त्र बार-बार मसीही लोगों से समय-समय पर बल देता है कि वे "मसीह यीशु में परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ बुलाहट के अनुसार" (फ़िलि. 3:14; KJV) जीएँ। याकूब 1:27 हमें बताता है कि हम अपने आप को "संसार से निष्कलंक रखें।" पौलुस ने कहा "इस संसार के सदृश न बनो" परन्तु "परिवर्तित हो जाओ" (रोमियों 12:2)। यूहन्ना ने हमें आज्ञा दी, "इस संसार से प्रेम न रखो" (1 यूहन्ना 2:15)।

हमें इन उपदेशों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। पुराने समय में इस्राएलियों के समान, हो सकता है, कि हम भी यह विचार करें कि अगर हम इस संसार के साथ थोड़ा समझौता कर लेते हैं तो इसमें कोई समस्या नहीं है। एकदम अलग दिखाई देने को अनदेखा करते हुए - कि कहीं यह भद्दा अथवा एकदम हटकर न लगे - सम्भव है कि हम निर्लज्जता को धारण करने, अपवित्रता का प्रयोग करने, नशीले मद्यपान में शामिल होने, जुआ खेलने अथवा अपने चारों ओर के लोग जैसा करते हैं उनके समान लैंगिक अनैतिकता में शामिल होने की परीक्षा में पड़ जाएँ। कुछ लोग इस प्रकार तर्क देते हैं, "सांसारिक लोगों के साधारण व्यवहार में शामिल होने में कोई नुकसान नहीं है जब तक कि मैं किसी प्रकार का कोई जुर्म न करूँ अथवा किसी को नुकसान न पहुँचाऊँ। उनकी किसी भी गतिविधियों का एक भाग बनने के स्थान पर अच्छा यह है कि मैं उन्हें अच्छे के लिए प्रभावित करूँ।"

नया नियम कुछ अन्य प्रकार से सिखाता है। अन्य लोगों के साथ शामिल होने के लिए उनके जैसे काम करने के लिए झुकाव रखने के स्थान पर यह हमें सिखाता है कि हम अलग बनें: "अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो ... इसलिये प्रभु कहता है, उनके बीच में से निकलो और अलग रहो" (2 कुरिं. 6:14-17); "धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है" (1 कुरिं. 15:33)। पतरस ने यह गवाही दी कि नए नियम के मसीही लोगों ने संसार के पापों में अपने मित्रों के साथ सहभागिता नहीं की। उसने कुछ पापों को सूचीबद्ध किया जिसके लिए कुछ लोग दोषी रह चुके थे (और हो सकता है कि मसीह के लिए परिवर्तित होने से पूर्व उसके पाठक भी दोषी रहे हों)। इनमें "अन्यजातियों की इच्छा के अनुसार काम करना, और लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, और घृणित मूर्तिपूजा" के कार्य शामिल थे। वह आगे इस प्रकार कहता चला जाता है कि अन्य लोग "अचम्भा" करते हैं कि मसीही लोग "ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते," और इसलिये वे उन मसीही लोगों को "बुरा भला" कहते हैं (1 पतरस 4:3, 4)। यीशु ने हमें निर्देश दिए कि हम "जगत की ज्योति" बनें (मत्ती 5:14)। स्पष्ट रुप से ज्योति, अंधकार से अलग होती है।

पवित्र बनने के लिए, तब, हमें संसार से अलग और भिन्न होने की आवश्यकता

है। हमें चाहिए कि हम इसके पापमय व्यवहार के साथ भाग न लें।

2. परमेश्वर के उपयोग *के लिए* अलग किए हुए। वर्तमान में पवित्र होने के लिए यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर के लिए अलग बने रहें और इसका अर्थ यह है कि हम पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित हों। यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया जब उसने कहा, "इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:33)। उसने सिखाया, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले" (मत्ती 16:24)। पौलुस ने जब लिखा तब उसने मसीही लोगों को सिखाया कि वे परमेश्वर के लिए स्वयं को शुद्ध करें, "अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो" (रोमियों 6:13)। फिर से उसने रोमियों से कहा: "इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ" (रोमियों 12:1)। एक अन्य पत्र में उसने इस प्रकार के शुद्धिकरण के लिए मकिदुनियाई लोगों का प्रयोग एक उदाहरण के रुप में किया और कहा कि "उन्होंने पहले प्रभु को अपने आपको दे दिया" (2 कुरिं. 8:5)।

एक मसीही होने के कारण प्रत्येक रविवार के दिन आराधना करने के लिए सन्तों के साथ एकत्रित होना, प्रभु-भोज में भाग लेना, भजन गाना, प्रार्थना करना, बाइबल पढ़ना और अध्ययन करना, और अपना धन परमेश्वर को देना आवश्यक है; परन्तु इसमें और भी कुछ शामिल है। हमारी मसीहयत ऐसी हो जो उन सब कामों को प्रभावित करे जो हम करते हैं।

वर्तमान में पवित्र होने का अर्थ क्या है? पाप से दूर रहने के साथ-साथ इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के प्रति स्वयं को पूरी तरह से दे देना। जैसा कि मसीही लोग संसार से अलग किए हुए लोग हैं, हमें भी परमेश्वर के लिए अलग होने की आवश्यकता है, प्रभु के लिए समर्पित होने की आवश्यकता है और मसीह के लिए शुद्ध बनने की आवश्यकता है!

निष्कर्ष

जब हम लैव्यव्यवस्था पढ़ना आरम्भ करते हैं तब हो सकता है कि हम आश्चर्य करें कि सम्भावित रुप से इसका हमारे लिए क्या मूल्य हो सकता है। इसमें बलिदानों के बारे में, अशुद्धता और यहूदी पर्वों के बारे में सारे नियम दिए हुए हैं! हम उन नियमों से बँधे हुए नहीं हैं फिर हम उनमें रुचि क्यों लें?

इस प्रश्न का एक उत्तर यह हो सकता है कि लैव्यव्यवस्था लिखे जाने के पीछे यह मानसिकता थी कि "एक पवित्र जाति" बनने में इस्राएल की सहायता की जा सके। इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ने और समझने से यह हमारी सहायता कर सकती है कि वर्तमान में प्रभु की कलीसिया के रुप में हम परमेश्वर की वह "पवित्र जाति" बन जाएँ जैसा वह हमसे चाहता है। हम आशा करते हैं कि, पवित्रता हमसे क्या

चाहती है इसके विषय में हमारी समझ उस समय विस्तृत हो जाएगी जब हम लैव्यव्यवस्था में अधिक खोज करते हैं और यह सीख सकें कि जब इस्राएल के लिए कहा गया कि वह "एक पवित्र जाति" बने तो इस्राएल के लिए इसका अर्थ क्या था।

कोय डी. रोपर

समाप्ति नोट्स

[1]अंग्रेज़ी पुराना नियम के अन्य चार भाग इतिहास, कविता, बड़े भविष्यद्वक्ता और छोटे भविष्यद्वक्ता हैं व्यवस्था *(तोरह)* के अतिरिक्त इब्रानी बाइबल भविष्यद्वक्ता *(नेवी'इम)* और लेखन *(केथुविम)* में बँटी हुई है। [2]इब्रानी बाइबल में पंचग्रन्थ की पाँच पुस्तकों के नाम पाठ्य के प्रथम शब्द से आते हैं। [3]इस गोत्र का नाम याकूब के तीसरे पुत्र लेवी के नाम के अनुसार रखा गया याजक लोग लेवी गोत्र से थे इसलिए वे "लेवी" थे; परन्तु वे अन्य लेवियों से भिन्न थे क्योंकि वे सब, प्रथम महायाजक हारून के वंशज थे. अन्य शब्दों में सब याजक लेवी थे परन्तु सब लेवी याजक नहीं थे इस्राएलियों के द्वारा चढ़ाई जाने वाली आराधना में याजक मुख्य व्यक्ति का काम करते थे जबकि लेवी विभिन्न तरीकों से उनकी सहायता करते थे। [4]लेवियों को अन्य ज़िम्मेदारियाँ भी दी गई उदाहरण के लिए उनसे यह अपेक्षा की गई कि वे (याजकों के साथ) लोगों को परमेश्वर की व्यवस्था सिखाएँ (10:11; व्यव. 33:8, 10; 2 इतिहास 17:7.9; 35:3; नहेम्य. 8:7, 8)। [5]याकूब के बारह पुत्रों में से दो पुत्र लेवी और यूसुफ के नाम इस्राएल के बाहर गोत्रों की सूची में नहीं है इसके स्थान पर यूसुफ के दो पुत्र एप्रैम और मनश्शे, बारह गोत्रों में दो मुखिया हुए। [6]इस विषय पर अतिरिक्त जानकारी कोय डी. रोपर, *गिनती*, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री (सर्ची, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2012), 525-34 के द्वारा उपलब्ध करवाई गई है। [7]अन्ततः लैव्यव्यवस्था की सामग्री परमेश्वर से उत्पन्न होती है जैसा 2 तीमुथियुस 3:16, 17 कहता है। [8]आर. के. हैरिसन ने लिखा, "जैसा [एज़्रा के समय से] यहूदावाद, इस्लाम और मसीहत के द्वारा परम्परागत रुप से मूसा को मात्र दिव्य रुप से प्रकट की गई व्यवस्था [पंचग्रन्थ] के मध्यस्थ के रुप में स्वीकार करना नहीं रहा है परन्तु पूरे पंचग्रन्थ के लेखक के रुप में भी उसे स्वीकार किया गया है प्राचीन लेखक जैसे कि ... फ़िलो, जोसेफ़स, और मसीहा और तलमूड से सम्बन्धित अधिकारियों ने बिना कोई प्रश्न किए तोरह के लेखक के रुप में मूसा को स्वीकार किया" (आर. के. हैरिसन, इन्ट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेन्ट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1969], 497). [9]यहाँ पर "उदारवादी" शब्द का प्रयोग उन लोगों की ओर संकेत करने के लिए प्रयोग में लिया गया है जो रुढ़िवादी विद्वानों के द्वारा रखे जाने वाले विचार की तुलना में धर्मशास्त्रों के लिए एक निचले स्तर का विचार रखते हैं, जबकि रुढ़िवादी विद्वान यह प्रमाणित करते हैं कि बाइबल पूरी तरह से और मौखिक रुप से परमेश्वर की प्रेरणा से है और इस कारण इसमें कोई भी गलतियाँ नहीं हैं. सम्भावित रुप से उदारवादी यह मानते हैं कि बाइबल सामान्य रुप से सच्ची पुस्तक है परन्तु इसमें गलतियाँ हैं और/अथवा इसके मुख्य विचार सराहनीय हैं परन्तु इसमें दिए गए शब्द दिव्य रुप से नहीं दिए गए अनेक बार, उदारवादी विद्वानों को इस प्रकार देखा जा सकता है जो अपने प्राथमिक कार्य के रुप में यह समझाने की आवश्यकता देखते हैं कि बाइबल के शब्द वास्तव में कहाँ से आए हैं क्योंकि ये परमेश्वर से उत्पन्न नहीं हुए थे इसके साथ ही रुढ़िवादी विद्वान बाइबल में दिए गए चमत्कारों को सच्ची घटनाओं के रुप में स्वीकार करते हैं; उदारवादी, सामान्य नियम के अनुसार ऐसा नहीं मानते। [10]दस्तावेज़ के रुप में लिखित अनुमान पर अधिक जानकारी के लिए देखें कोय डी. रोपर, *निर्गमन*, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री (सर्ची, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2008), 651-55.

[11]इस सिद्धान्त के साथ जुड़ा हुआ "जे" दस्तावेज़ अत्यधिक प्रसिद्ध है क्योंकि यह परमेश्वर के लिए "यहोवा" नाम का प्रयोग करता है, जबकि "ई" दस्तावेज़ परमेश्वर के लिए "एलोहिम" नाम का

प्रयोग करता है "डी" प्राथमिक रुप से व्यवस्थाविवरण में देखा गया है, और "पी," जो एक अन्तिम स्त्रोत है, वह पूरे पंचग्रन्थ में पाया गया है और यह प्रदर्शित करता है कि याजकीय विषयों में किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है पंचग्रन्थ के स्त्रोतों के विषय पर विद्वानों ने तर्क-वितर्क करना और वेल्लहौसेन के सिद्धान्त में शेष चार के परे अन्य स्त्रोतों पर अनुमान लगाना जारी रखा है। [12]"पी" दस्तावेज़ को हालांकि इसकी दिनाँक बहुत समय बाद की मानी गई है फिर भी इसके विषय में ऐसा माना जाता है कि इसमें कुछ बहुत ही पुरानी सामग्री है जो प्राचीन समय से सुरक्षित रखी गई "पवित्रता के कोड" को सन् 1877 में जर्मनी के एक विद्वान के द्वारा एक सहित्यिक भाग के रुप में पहचाना गया और इसे कुछ निश्चित विशेषताओं के साथ माना गया है जो इसे "पी" दस्तावेज़ (अथवा दस्तावेज़ों) से अलग करते हैं जिनके साथ यह पाया गया। (रिचर्ड एन. सौलेन, *हेन्डबुक ऑफ़ बिब्लिकल क्रिटिसिज़्म*, दूसरा संस्करण [अटलान्टा: जॉन नोक्स प्रेस, 1981], 90.) विद्वानों ने पंचग्रन्थ में अनेक स्त्रोतों की खोज करना जारी रखा है और यह परिणाम पाया कि पी के लिए ऐसा विचार रखा गया कि यह अनेक अलग-अलग स्त्रोतों से आता है जिनकी पहचान, "पी" को अलग-अलग अक्षर जोड़ने के द्वारा की गई है लैव्यव्यवस्था के आरम्भ को समझाने के लिए अन्य सिद्धान्तों की वृद्धि की गई परन्तु उनमें से अधिकतर सिद्धान्त, अगर सबके साथ ऐसा नहीं है तो, दस्तावेज़ के रुप में लिखित अनुमानों की वैधता की कल्पना करते हैं इस लिखित अनुमान का एक अच्छा आलोचक और लैव्यव्यवस्था के आरम्भ के अन्य संस्करण आर. लेअर्ड हेरिस, "लेविटिकस," इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 2, *जेनेसिस - नम्बर्स*, एड. फ्रेंक ई. गेबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 502-13 में दिए हुए हैं। [13]ग्लीसन एल. आर्चर, जुनियर, *अ सर्वे ऑफ़ ओल्ड टेस्टामेन्ट इन्ट्रोडक्शन*, रेव. एन्ड एक्स. (शिकागो: मूडी पब्लिशर्स, 2007), 144. [14]पूर्वोक्त., 144-46. [15]अगर यीशु मसीह ने ऐसा माना कि मूसा ने व्यवस्था अथवा तोरह को लिखा तो मसीही लोग उससे हटकर कैसे मान सकते हैं? [16]कुछ विद्वान जो बाइबल विषयक और पुरातत्व विषयक साक्ष्य की व्याख्या करते हैं वे निर्गमन के लिए लगभग 1290 ई.पू. की दिनाँक प्रदान करते हैं जबकि कनान में प्रवेश करने की दिनाँक लगभग 1250 ई.पू. प्रदान करते हैं। [17]इस्राएली मिस्र से निकलने के बाद तीसरे महीने के प्रथम दिन सिनै के पास पहुँचे (निर्गमन 19:1)। मूसा ने पर्वत पर चालीस दिनों की दो अवधि का समय बिताया और व्यवस्था प्राप्त की; जब वह दूसरी लौटा तब इस्राएलियों ने निवासस्थान का निर्माण करना प्रारम्भ कर दिया उन्होंने सिनै के पास पहुँचने के लगभग दस महीनों के बाद और निवासस्थान का निर्माण करना आरम्भ करने के छः महीनों के बाद मिस्र से निकलने के दूसरे वर्ष के प्रथम महीने के प्रथम दिन निवासस्थान का काम पूरा कर लिया (निर्गमन 40:17)। इस्राएलियों ने दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन को कनान की ओर यात्रा करने के लिए सिनै से प्रस्थान किया (गिनती 10:11)। इस कारण एक वर्ष में लगभग दस दिन कम वे सिनै के पास रहे। [18]इस पुस्तक के विवरण को यह समझने के लिए नहीं लिया जाए कि इसमें दी गई सामग्री मात्र याजकीय कार्य के लिए लागू होती है अथवा मात्र याजकीय कार्य के द्वारा ही जानी जा सकती है प्रत्येक इस्राएली के लिए यह आवश्यक था कि वह उन नियमों की जानकारी रखे जो लैव्यव्यवस्था में दी गई है जिससे वह उनका पालन कर सके। [19]देखें *परिशिष्ट: नए नियम में लैव्यव्यवस्था* ओन पेज 161. [20]हेरोल्ड लिन्डसेल, "इन्ट्रोक्शन टू लैव्यव्यवस्था," इन *NRSV हार्पर स्टडी बाइबल*, एक्स. एन्ड अपडेटिड, एड. वर्लिन डी. वर्ब्रग (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 1991), 139.

[21]बिल टी. अर्नोल्ड एन्ड ब्रायन ई. बेयर, *एन्काउन्टरिंग द ओल्ड टेस्टामेन्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1999), 119. [22]फ्रान्सिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एन्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्गस, *अ हीब्रू एन्ड इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेन्ट* (ओक्सफ़ोर्ड: क्लेरेन्डन प्रेस, 1977), 872. [23]डब्ल्यु. ई. वाइन, मेरिल्ल एफ़. अंगर, एन्ड विलियम वाइट, जुनियर, *वाइन कम्प्लीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एन्ड न्यु टेस्टामेन्ट वर्ड्स* (नाशविले: थोमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 113. [24]व्यवस्था की विस्तृत प्रकृति पर विचार-विमर्श रोपर, *एक्सोडस*, 684-85 में किया गया है। [25]वाइन, अंगर, एन्ड वाइट, 307.